Poèmes extraits de la *Kulliyât* de **Sultan Muhammad Quli Qutub Shah**
(1565=1556-1605)

हम्द

चन्द्र सूर तेरे नूर थे, निस दिन कों नूरानी किया ।
तेरी सिफ़त किन कर सके, तूँ आपी मेरा है जिया ।
तुज नाम मुँज आराम है, मुँज जीव सो तुज काम है ।
सब जग कों तुझ सों काम है, तुज नाम जप माला हुवा ।
तुज याद में जग मोहिया, है जग उपर तेरा मया ।
जो जग मँगे सो तूँ दिया, तूँ ही जगत का है दया ।
जीता हूँ तेरी आस थे, आया है रहम आकास थे ।
जे कुच मँगूँ तुज पास थे, सो है सो मुँज कों तूँ दिया ।
बहुतिक मया सेती अपुन, दीना क़ुतुब को सब दखिन ।
सीसों नबी का नित चरन, जब लग है तन म्याने जिया ॥

बादशाह की सालगिरह - २

नबी के दुआ थे बरसगांठ आया
पिया हूँ मैं हज़रत के हत आब-ए-कौसर
मेरा क़ुतुब तारा है तारियाँ में निछल
फ़लक दूर नमने सो मंडप उचाकर
कलस दिसते थाबनाँ ऊपर चन्द सूरज
सूरज चन्द अपे ताल हो कर बजें नित
करे मुश्तरी रक़्स मुज बज़्म में नित
कलियाँ इश्क़ की मुज हीये में खिलाकर
मेरा गुलिस्ताँ ताज़ा इस थे हुवा है
दन्दे दुश्मनाँ कों सो यकजा मिलाकर

खुशियाँ की ख़बर के दमामे बजाया
तू शाहाँ ऊपर मुज कलस कर बनाया
तू मुज पर फ़लक रंग का चतर छाया
जड़त सब सितारे सो उस पर जड़ाया
दो झलकार नूराँ सेती झकझकाया
मन्दल हो फ़लक टमटमायाँ बजाया
बरसगांठ में ज़ुहरा कल्याँ गाया
फूलाँ ग़म के दिल बोस्ताँ थे गंवाया
मुज इस बाग़ थे मेवा दम दम खिलाया
सुवा-ए-सिपन्द के पातराँ कर नचाया

खुदाया मआनी की उम्मीद बर लिया
कि जियूँ सानत के मेहों थे जग उघाया ॥

बरसात - १

रूत आया कलियाँ का हुआ राज
मेंहूँ बुन्द का लियो हत प्याला
तन थन्डत लरजत जौबन गरजत
नारी मुख झमके कैसे बिजली
केस फूल दिसे सितारे आसमान
चून्धेर गरजत होर मेंहों बरसत
हज़रत मुस्तफ़ा के सद्क़े आया बरशकाला

हरी डाल सर फूलाँ के ताज
रूत नारियाँ साजें एकस थे यक साज
पिया मुख देखत कन्चुकी किस बकसी आज
अन्जल बावक में सुहे उस लाज
इस ज़माने की परी पद्मिनी आए आज
इश्क़ के चमने चमन मोराँ का राज
क़ुतुब शह इश्क़ करो दिन दिन राज ॥

छबीली - ६

छबीली सों लग्या है मन हमारा
कि उस बिन नहीं हमन एक तिल क़रारा ।
सबूरी कों नहीं है ठार दिल में
सबूरी क्यूँ करे सो करनहारा ।
अलक फाँसी सों पंखी जिव पकड़ने
दिखाई गाल ऊपर तिल का चारा ।
बसे मन में सो इसके ख्याल निस दिन
नहीं इस ख्याल बिन मुँज मन में ठारा ।
नयन बहरी छोड़ी सूके डोरी सों
करे चंचल पँखी दिल को शिकारा ।
मया करना करे माशुक़ अपे हो
कहो ना क्या करे आशिक़ बिचारा ।
नबी सिदक़े क़ुतुब आशिक़ है तेरा
सदा मिल अछ न हो एक तिल भी न्यारा ॥

ग़ज़ल - २३

पिया बाज प्याला पिया जाए ना
पिया बाज यक तिल जिया जाए ना ।
कहेथे पिया बिन सबूरी करूँ
कह्या जाए अम्मा किया जाए ना ।
नहीं इश्क़ जिस वो बड़ा कूड़ है
कधीं उससे मिल बैसिया जाए ना ।
क़ुतुब शह न दे मुंज दिवाने कूँ पन्द
दिवाने कूँ कुच पन्द दिया जाए ना ॥